जैन
पथप्रदर्शक

ए-4, बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)

नैतिक एवं सामाजिक चेतना का अग्रदूत निष्पक्ष पाक्षिक

पात्रता ही पवित्रता की जननी है।

– बिन्दु में सिन्धु, पृष्ठ – 9

वर्ष : 26, अंक : 10 | **सम्पादक :** पण्डित रतनचन्द भारिल्ल | आजीवन शुल्क : 251 रुपये
अगस्त (द्वितीय) 2003 | **प्रबन्ध सम्पादक :** पण्डित संजीवकुमार गोधा | वार्षिक शुल्क : 25/-, एकप्रति : 2/-

श्री कुन्दकुन्द कहान दिग. जैन तीर्थसुरक्षा ट्रस्ट, मुम्बई द्वारा आयोजित -

26 वाँ आध्यात्मिक शिक्षण-शिविर सानन्द सम्पन्न

● विभिन्न स्थानों से पधारे हुये 1242 आत्मार्थी ज्ञानयज्ञ में सम्मिलित हुये ● प्रात: 5 बजे से रात्रि 10 बजे तक विविध कार्यक्रमों द्वारा प्रतिदिन 13 घण्टे अविरल ज्ञानगंगा प्रवाहित हुई ● 22 विद्वानों द्वारा विविध कार्यक्रमों से समाज लाभान्वित ● 49 हजार 750 रुपये का नकद एवं 90 हजार 253 रुपये का उधार इसतरह कुल 1 लाख 40 हजार 3 रुपये का सत्साहित्य घर-घर पहुँचा ● 22 हजार रुपये के 1345 घण्टों (ऑडियो 670 एवं वीडियो 675 घण्टे) के प्रवचनों के कैसिट एवं सी. डी. बिकीं ● वीतराग-विज्ञान एवं जैनपथप्रदर्शक के अनेक आजीवन एवं वार्षिक सदस्य बने।

जयपुर (राज.) : आध्यात्मिकसत्पुरुष श्री कानजीस्वामी के सदुपदेश से निर्मित श्री टोडरमल स्मारक भवन में दिनांक 27 जुलाई से 5 अगस्त श्री कुन्द कुन्द कहान दिग. जैन तीर्थसुरक्षा ट्रस्ट, मुम्बई द्वारा आयोजित 26 वाँ बृहद् आध्यात्मिक शिक्षण शिविर सानन्द सम्पन्न हुआ। ज्ञातव्य है कि शिविर का उद्घाटन राजस्थान के महामहिम राज्यपाल श्री निर्मलचन्द जैन द्वारा किया गया; जिसके विस्तृत समाचार विगत अंक में प्रकाशित किये गये हैं।

इस अवसर पर देश-विदेश में ख्यातिप्राप्त तार्किक विद्वान डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल ने प्रात: एवं रात्रि में प्रवचनसार की 79 से 85 गाथाओं के आधार पर दर्शन मोह एवं चारित्र मोह का स्वरूप एवं उनके नाश का उपाय विशेषरूप से स्पष्ट किया।

आपके प्रात:कालीन प्रवचनों के पूर्व तीन दिन ब्र. जतीशचन्दजी शास्त्री, सनावद, तीन दिन पण्डित संजीवकुमारजी गोधा, जयपुर तथा एक-एक दिन पण्डित अनिलजी शास्त्री, भिण्ड एवं पण्डित पीयूषकुमारजी शास्त्री जयपुर के विविध विषयों पर प्रवचन हुये।

तथा रात्रिकालीन प्रथम प्रवचनों में पण्डित प्रदीपकुमारजी झांझरी उज्जैन के तीन, पण्डित राकेशकुमारजी शास्त्री, नागपुर के दो, पण्डित शान्तिकुमारजी पाटील जयपुर के तीन तथा ब्र. कैलाशचन्दजी 'अचल' का एक प्रवचन हुआ। अन्तिम दिन पण्डित पूनमचन्दजी छाबड़ा का प्रवचन हुआ।

दोपहर की व्याख्यानमाला में प्रतिदिन क्रमश: डॉ. श्रेयांसकुमारजी सिंघई जयपुर, पण्डित जयकुमारजी बारां, पण्डित कमलकुमारजी पिड़ावा, डॉ. भागचन्दजी शास्त्री जयपुर, पण्डित राकेशजी शास्त्री लोनी-दिल्ली, पण्डित देवेन्द्रकुमारजी सिंगोड़ी, पण्डित गुलाबचन्दजी जैन बीना एवं पण्डित अशोककुमारजी जैन सिरसागंज के विविध विषयों पर हुये प्रवचनों का लाभ मिला।

शिक्षण कक्षाओं में प्रतिदिन पण्डित रतनचन्दजी भारिल्ल द्वारा निमित्त उपादान, ब्र. यशपालजी जैन द्वारा गुणस्थान विवेचन एवं जिनधर्म प्रवेशिका, ब्र. जतीशचन्दजी शास्त्री सनावद द्वारा छहढाला, पण्डित प्रदीपकुमारजी झांझरी द्वारा मोक्षमार्गप्रकाशक, पण्डित राकेशकुमारजी शास्त्री नागपुर द्वारा तत्त्वार्थसूत्र, पण्डित शान्तिकुमारजी पाटील जयपुर द्वारा परमभावप्रकाशक नयचक्र एवं पण्डित संजीवकुमारजी गोधा जयपुर द्वारा क्रमबद्धपर्याय विषय पर कक्षायें चलाई गईं। इसके अतिरिक्त सायं बालकक्षा भी ली गई।

प्रतिदिन प्रात: 5.30 से 6.30 तक पण्डित देवेन्द्रकुमारजी बिजौलिया की चार दिन एवं ब्र. कैलाशचन्दजी 'अचल' ललितपुर द्वारा पाँच दिन प्रौढ़कक्षा ली गई।

श्री कुन्दकुन्द कहान दि. जैन तीर्थसुरक्षा ट्रस्ट सलाहकार बोर्ड का अधिवेशन – शुक्रवार, दिनांक 1 अगस्त 2003 को दोपहर 2.00 बजे सम्पन्न हुआ।

अधिवेशन की अध्यक्षता ट्रस्ट के उपाध्यक्ष ब्र. धन्यकुमारजी बेलोकर गजपंथा ने की। मुख्य अतिथि के रूप में श्री कपूरचन्दजी जैन (डैडी) भोपाल तथा विशिष्ट अतिथि के रूप में श्री धन्यकुमार आर. शाह इंडी (कर्नाटक) मंचासीन थे।

(शेष पृष्ठ 8 पर ....)

सम्पादकीय -

हरिवंश कथा 35

- रतनचन्द भारिल्ल

(गतांक से आगे....)

एक दिन कुमार वसुदेव ने किसी कारणवश मदनवेगा से 'आओ वेगवती !' कह दिया। इससे मदनवेगा रुष्ट होकर घर के अन्दर चली गई। उसी समय त्रिशिखर विद्याधर की विधवा पत्नी शूर्पणखी मदनवेगा का रूप धरकर तथा अपनी प्रभा से महलों को एकदम प्रज्वलित कर छल से वसुदेव को हर ले गई। वह उसे आकाश से नीचे गिराना ही चाहती थी कि उसे नीचे आकाश में अकस्मात् आता हुआ ह्न कुमार वसुदेव का बैरी मानसवेग विद्याधर दिखा; अत: वह कुमार को मार डालने हेतु मानसवेग को सौंपकर चली गई। मानसवेग ने कुमार को आकाश से छोड़ा तो वे नीचे एक घास के ढेर पर गिर गये। वहाँ के मनुष्यों द्वारा जरासंघ के यश को सुनकर कुमार समझ गये कि यह राजगृह नगर है। अतः उन्होंने संतोष की सांस ली और वे नगर में चले गये। राजगृह नगर में कुमार ने पुण्ययोग से सहज प्राप्त एक करोड़ सुवर्ण मुद्राओं को दीन-दुखी जीवों में वितरित करके 'दानशील' होने का यश प्राप्त किया।

निमित्त ज्ञानियों ने जरासंघ को बताया था कि जो आपके नगर से ही एक करोड़ सुवर्ण मुद्रायें प्राप्त कर वहीं नगर में बाँटेगा, वह तुम्हें मारनेवाला पुत्र उत्पन्न करेगा। निमित्त ज्ञानियों के कहे अनुसार वहाँ ऐसे व्यक्ति की खोज हो ही रही थी। इसकारण वसुदेव पकड़ लिए गये और उन्हें तत्काल प्राणान्त करने की भावना से एक चमड़े की भाथड़ी में बंद कर पहाड़ की चोटी से नीचे गिरा दिया।

कहते हैं पुण्यात्मा कहीं भी जाय, यदि उसे एक मारता है तो दूसरा बचाने वाला भी मिल ही जाता है; अतः अपने को सदैव पुण्य कार्य करते ही रहना चाहिए और पापों से सदैव दूर रहना चाहिए। एतदर्थ आत्मा-परमात्मा का ध्यान ही एक मात्र वह उपाय है, जिससे जीव लोक/परलोक में सुखी रह सकता है।

कुमार वसुदेव नीचे गिरने ही वाले थे कि अकस्मात् वेगवती ने वेग से आकर उन्हें थाम लिया। जब वेगवती उन्हें कहीं ले जाने लगी तो वे मन में ऐसा विचार करने लगे कि देखो ! जिसप्रकार भारुड़ पक्षी चारुदत्त को हरकर ले गया था; उसीप्रकार मुझे यह हरकर कहीं ले जा रही है। न जाने अब क्या होने वाला है?

कुमार वसुदेव को संसार असार दिखने लगा। वे सोचते हैं ह्न ''ये बन्धु-बान्धवों के सम्बन्ध, ये भोग सम्पदायें दुःखदायक हैं और यह सुन्दर कान्तियुक्त शरीर का मोह भी दुःखद ही है, फिर भी मेरे जैसे मूर्ख प्राणी इसके राग-रंग में उलझे हुए हैं, इन्हें सुखद मान बैठे हैं। जीव अकेला ही पुण्य-पाप करता है, अकेला ही सुख-दुःख भोगता है। अकेला ही पैदा होता है और मरता है, फिर भी आत्मीयजनों के राग में अटका रहता है, जो आत्महित में लग गये हैं, जो भोगों को त्याग कर मोक्षमार्ग में अग्रसर हो गये हैं, वे ही धीर-वीर मनुष्य सुखी हैं।

इसप्रकार चिन्तन में डूबे वसुदेव को वेगवती ने पर्वत तट पर उतारा। पति को देख वेगवती चिरवियोग का स्मरण कर विलख-विलख कर रोने लगी। तदन्तर वसुदेव के द्वारा कुशलक्षेम पूछने पर प्रिया वेगवती ने पति के हरे जानेपर अपने घर जो दुःख उठाये, वे सब कह सुनाये। उसने कहा कि ''मैंने आपको विजयार्द्ध की दोनों श्रेणियों में खोजा, अनेक वनों एवं नगरों में देखा तथा समस्त भरत क्षेत्र में चिरकाल तक ढूँढा; परन्तु आप नहीं मिले।''

बहुत घूमते-फिरने के बाद मैंने मदनवेगा के पास आपको देखा तो यह विचार किया कि यहाँ रहते हुए ह्न भले ही आपके साथ वियोग रहे, आपके दर्शन तो पाती रहूँगी। इसी विचार से मैंने यहाँ अलक्षित रूप से रहना चाहा; परंतु त्रिशिखर की भार्या शूर्पणखी मदनवेगा का रूप धरकर आपको मारने की खोटी नियत से आकाश में ले गई। जब आप उसके द्वारा पर्वत की चोटी से नीचे गिराये जा रहे थे कि मैंने बीच में ही आपको झेल लिया।'' इसप्रकार वेगवती से अपने ऊपर घटित घटना जानकर वसुदेव कुछ समय के लिए वेगवती के साथ ही सुख से रहे।

एक दिन वसुदेव ने नागपास से बंधी हुई एक सुन्दर कन्या को देखा। उसे बन्धन में देख उनका हृदय दया से द्रवित हो गया और उन्होंने उसे बन्धन से मुक्त कर दिया। बन्धन से छूटते ही उस कन्या ने वसुदेव को नमस्कार किया और कहा कि ह्न हे नाथ ! आपके प्रसाद से मेरी विद्या सिद्ध हो गई। मैं दक्षिण श्रेणी पर स्थित गगनवल्लभ नगर की रहनेवाली राजकन्या हूँ। मेरा नाम बालचन्द्रा है और मैं विद्युद्रंष्ट्र के वंश में उत्पन्न हुई हूँ। मैं नदी में बैठकर विद्या सिद्ध कर रही थी कि एक शत्रु विद्याधर ने मुझे नागपास में बांध दिया और आपने मुझे उस बन्धन से मुक्त किया है।

हमारे वंश में पहले भी एक केतुमती कन्या हो गई है, उसे भी मेरे ही समान पुण्डरीक नामक अर्द्धचक्री ने अचानक आकर बन्धन से मुक्त किया था। वह जिसप्रकार निर्विरोध रूप से उस अर्द्धचक्री की पत्नी हो गई थी; उसी प्रकार मैं भी निश्चित रूप से आपकी पत्नी होनेवाली हूँ। हे नाथ ! आप विद्याधरों के लिए अति दुर्लभ इस विद्या को ग्रहण कीजिए।''

कन्या के इसप्रकार कहने पर कुमार वसुदेव ने कहा ह्न ''मेरी इच्छा है कि तुम वह विद्या वेगवती को दे दो।''

कुमार वसुदेव की आज्ञा पाकर उसने 'तथास्तु' कह ह्न वेगवती के लिए वह विद्या दे दी और आकाश में उड़कर गगनवल्लभ नगर को चली गई।

आचार्य कहते हैं कि *जिस व्यक्ति ने सत्कर्म करके पुण्यार्जन किया है, उसके ही लौकिक-पारलौकिक मनोरथ पूर्ण होते हैं। अतः जिनशासन के अनुसार सभी को सदाचारी जीवन जीते हुए वीतराग धर्म की आराधना करना ही चाहिए।* ●

कहान-संदेश

धर्मी की मंगल भावना

19

प्रश्न : पर्याय को द्रव्य से कथंचित् भिन्न किस अपेक्षा से कहा है ?

उत्तर : सम्पूर्ण द्रव्य को प्रमाणज्ञान से देखने पर पर्याय द्रव्य से कथंचित् भिन्न है और कथंचित् अभिन्न है – ऐसा कहा जाता है ; परन्तु शुद्धनय के विषयभूत त्रैकालिक ध्रुव की अपेक्षा से देखने पर वास्तव में द्रव्य पर्याय से भिन्न ही है। पर्यायार्थिकनय से देखने पर पर्याय द्रव्य से अभिन्न है। यहाँ प्रयोजन की सिद्धि के लिए तो पर्याय को गौण किया, अविद्यमान ही माना, त्रैकालिक ध्रुव स्वभाव को मुख्य करके भूतार्थ का आश्रय कराया है।

जब वस्तु मुक्तस्वरूप है तो उसे बन्ध के साथ सम्बन्ध क्यों होता है ? तो कहते हैं कि वस्तु तो मुक्तस्वरूप ही है; परन्तु जीव को उसका स्वीकार ही नहीं है; इसलिये वस्तु को जो बन्ध के साथ सम्बन्ध है, वह अज्ञानी के अज्ञान का माहात्म्य है। ज्ञेय-ज्ञायक सम्बन्ध भी पर्याय के साथ है। द्रव्य को अर्थात् ध्रुव को तो ज्ञेय-ज्ञायक सम्बन्ध भी नहीं है।

आत्मा परद्रव्य की पर्याय को तो इधर-उधर नहीं कर सकता; परन्तु अपने में क्रमानुसार होनेवाली पर्याय को भी इधर-उधर नहीं कर सकता। मात्र जाननेवाला ज्ञाता ही है। दया-दान-पूजा-भक्ति का राग हो उसे भी परज्ञेयरूप जानता है। जैसे आँख देखने के अतिरिक्त क्या कर सकती है ? वैसे ही ज्ञान जानने के सिवा क्या कर सकता है ?

मैं योग्य नहीं हूँ ...योग्य नहीं हूँ ह्न ऐसे उसके अस्वीकार से बात अटकी है; परन्तु उसे अन्तर से ऐसा लगना चाहिये कि मैं इसी क्षण परमात्मा होने योग्य हूँ। जो जीव इस बात को स्वीकार करता है, अन्तर से हाँ कहता है, उसी जीव को राग से पृथक् होने का प्रारम्भ हो चुका है। वह पृथक् होता जाता है; इसलिए नैगमनय से पृथक हो गया – ऐसा शास्त्र में कहा है।

कहते हैं कि स्वर्ग से इन्द्र भी उतर आयें, तब भी रोग के काल में रोग हुए बिना नहीं रहता; उसीप्रकार राग के काल में राग आये बिना नहीं रहता; इसलिए ऐसा जानकर स्वभाव पर दृष्टि करना ही संतोष एवं शांति का उपाय है।

परमात्मा के घर में प्रवेश करना है और कहे मैं तो पामर हूँ... पामर हूँ ... पामर हूँ, तो इन दो बातों में मेल नहीं है। पहली ही चोट में मैं सिद्ध हूँ – ऐसा लक्ष्य में नहीं लेता, उसे जिज्ञासु नहीं कहते।

जो आत्मा है, उसमें पर के कर्ता-कर्म आदि षट्कारक नहीं हैं, राग के षट्कारक भी उसमें नहीं हैं और अपनी निर्मल पर्याय के षट्कारकों से भी परे – ऐसा आत्मा सो मैं हूँ। वास्तव में तो मोक्षमार्ग के षट्कारक भी मेरे द्रव्यस्वभाव में नहीं हैं। मोक्षमार्ग की पर्याय के एकसमय के षट्कारकों की प्रक्रिया से पार-भिन्न निर्मल अनुभूति-त्रैकालिक अनुभूति, उस अनुभूति मात्रपने के कारण मैं शुद्ध हूँ।

प्रश्न : पर की पर्याय को तो नहीं करता; परन्तु अपनी पर्याय को भी नहीं करता कैसे ?

उत्तर : अपनी पर्याय भी स्वकाल में ही होती है; अत: उसे कैसे कर सकता है ? वास्तव में तो वह ज्ञाता-दृष्टा ही है। प्रयत्न करके मोक्ष प्राप्त कर ऐसा कथन आता है, परिश्रम से मोह को जीत-ऐसा वाणी में आता है; परन्तु वास्तव में तो उसकी दृष्टि में ज्ञाता-द्रष्टा द्रव्य ही आया; इसलिए वह ज्ञाता-दृष्टा ही है और ऐसा जानने में ही जीव का अनन्त पुरुषार्थ है।

यदि निर्णय करना है तो क्या करना ? उसके लिए कहते हैं कि रागमिश्रित निर्णय से निर्विकल्प निर्णय नहीं होता; बल्कि प्रथम तो रागमिश्रित विचार से निर्णय करता है कि मैं ज्ञानस्वरूप आत्मा हूँ, तत्पश्चात् सर्वज्ञदेव द्वारा कहे गये परमागम से निर्णय करता है कि मैं तो ज्ञानमात्र ही हूँ तथा गुरू के पास जाकर निर्णय करता है कि मैं ज्ञान हूँ। अभी सम्यग्दर्शन नहीं हुआ है; परन्तु सम्यग्दर्शन मुझे करना है -ऐसा उत्कण्ठावान आँगन में खड़ा हुआ जीव प्रथम ऐसा निर्णय करता है कि दया-दान के भाव विकार हैं, वह मेरा स्वरूप नहीं है। मैं तो ज्ञानस्वभाव आत्मा हूँ, अनादि-अनन्त ज्ञातास्वभावी हूँ – ऐसा विकल्प वह भी मैं नहीं हूँ। इसप्रकार प्रथम विकल्प द्वारा ऐसा निर्णय करता है।

ज्ञान की तथा रागादि की उत्पत्ति एकसाथ होती है, वह चैत्य-चेतकभाव की अर्थात् ज्ञेय-ज्ञायकभाव की अतिनिकटता के कारण से ही होती है; परन्तु वे एक द्रव्यरूप हैं; इसलिए होती है – ऐसा नहीं है। जैसे – दीपक द्वारा प्रकाशित होनेवाले घट-पटादिक दीपक को ही प्रकाशित करते हैं अर्थात् घट-पटादि दीपक के प्रकाश को ही प्रगट करते हैं, इसप्रकार दीपक अपनी पर्याय को प्रकाशता है और घट-पटादि को प्रकाशता है – इसप्रकार दीपक द्विरूपता के प्रकाश को प्रगट करता हुआ भी उन पदार्थों रूप नहीं होता अर्थात् उनमें प्रविष्ट नहीं होता तथा वे घट-पटादि भी उस दीपक में प्रविष्ट नहीं होते; उसीप्रकार आत्मा द्वारा ज्ञात होनेवाले रागादिभाव चेतकपने को ही प्रकाशते हैं, रागादिक को नहीं प्रकाशते। ज्ञान में ज्ञात होते हुये रागादिभाव ज्ञान की स्व-पर प्रकाशरूप द्विरूपता को प्रगट करते हैं; परन्तु रागादि आत्मा में प्रवेश नहीं करते तथा आत्मा भी रागादिरूप नहीं होता।

महा आनन्द का लाभ-प्राप्ति सो मोक्ष है। जीव को साध्यरूप से जो साधना है, वह मोक्ष है। उस मोक्ष का कारण कौन ? किस प्रकार मोक्ष को साधना ? तो कहते हैं कि पाँच भाव में जो शुद्ध परम पारिणामिकभाव वह मोक्षस्वरूप ही है। ऐसा मोक्षस्वरूप निष्क्रिय विद्यमान ध्रुवतत्त्व ही मैं हूँ – ऐसा दृष्टि में स्वीकार आने पर उपशम, क्षयोपशम तथा क्षायिक पर्याय प्रगट होती है, वही मोक्ष का कारण है।

पर्यूषण पर्व के अवसर पर कौन–कहाँ

पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट द्वारा प्रतिवर्ष की भांति इस वर्ष भी दशलक्षण महापर्व में समाज के आमंत्रण पर विद्वान भेजने की व्यवस्था की गई है; जिनकी सूची यहाँ दी जा रही है। दिनांक 8 अगस्त 2003 तक 447 स्थानों से आमंत्रण प्राप्त हो चुके हैं। अभी भी अनेक स्थानों से आमंत्रण आ रहे हैं। दिनांक 8 अगस्त तक लिये गये निर्णयानुसार महाराष्ट्र में 79 , राजस्थान में 78 ,मध्यप्रदेश में 116, उत्तरप्रदेश में 38, गुजरात में 19, तमिलनाडु, कर्नाटक, हरियाणा, बिहार, पश्चिम बंगाल एवं केरल में 16, दिल्ली में 40, जयपुर में 20 इसप्रकार कुल 418 स्थानों पर ही विद्वान भेजना संभव हो सका है । ध्यान रहे, इनमें 236 स्थानों पर तो पण्डित टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धान्त महाविद्यालय, जयपुर के स्नातक विद्वान ही जा रहे हैं। जयपुर एवं शेष निश्चित स्थानों की सूची आगामी अंक में प्रकाशित की जायेगी।

विशिष्ट विद्वान

1.कोटा : बाबू जुगलकिशोरजी 'युगल', **2.जयपुर (आदर्शनगर):** डॉ.हुकमचंदजी भारिल्ल, जयपुर, **3.जयपुर** (टोडरमल स्मारक) **:** पं. रतनचंदजी भारिल्ल, जयपुर, **4.टीकमगढ :** ब्र. जतीशचन्दजी शास्त्री, सनावद, **5. नांदेड (वि.नगर) :** पं. पूनमचंदजी छाबडा, इन्दौर, **6.बड़ौत :** ब्र.यशपालजी जैन, जयपुर, **7.बैंगलोर :** डॉ. उत्तमचंदजी, सिवनी, **8.मुम्बई (दादर) :** पं. अभयकुमारजी शास्त्री, छिन्दवाड़ा **9.मुम्बई (मलाड) :** पं. विमलप्रकाशजी झांझरी, उज्जैन, **10.सहारनपुर :** ब्र. अभिनंदनजी शास्त्री, खनियाँधाना, **11.कोटा (रामपुरा) :** ब्र. सुमतप्रकाशजी, खनियाँधाना, **12.विदिशा (किला–अन्दर) :** ब्र.संवेगी केशरीचन्दजी 'धवल', छिन्दवाडा, **13. देवलाली :** पं. राजेंद्रकुमारजी, जबलपुर, **14.इन्दौर (तिलकनगर) :** पं. कपूरचंदजी 'कौशल', भोपाल, **15.जबलपुर :** पं. शांतिकुमारजी पाटील, जयपुर, **16.मुम्बई (बोरीवली) :** पं. प्रदीपकुमारजी झांझरी, उज्जैन, **17.अकोला :** पं. हरकचंदजी बिलाला, अकोला, **18.अलीगढ :** पं. अशोकजी लुहाडिया, **19.कोलकाता :** ब्र. हेमचंदजी 'हेम', देवलाली।

विदेश में : **20.शिकागो** : पं. परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल, मुम्बई ।

(महाराष्ट्र प्रान्त)

२१ मुंबई(घाटकोपर) : पं.श्री प्रकाशचंदजी झांझरी, उज्जैन **22. मुंबई(भायं. वेस्ट) :** पं.श्री रजनीभाईजी दोशी, हिम्मतनगर **२३. मुंबई(सीमं. जिना.) :** पं.श्री शैलेशभाईजी शाह, तलोद **२४. मुंबई(भूलेश्वर रोड) :** पं.श्री सुशीलकुमारजी जैन, इन्दौर, **२५. नातेपुते** : पं.धन्यकुमारजी भोरे, कारंजा **२६. मलकापुर :** पं.श्री राजमलजी जैन, भोपाल **२७. देवलगाँवराजा :** पं.श्री जीवरावजी जैन, नासिक **२८. रामटेक :** पं.श्री गेंदालालजी जैन, रामटेक **२९. नागपुर :** पं.श्री अरहंतप्रकाशजी झांझरी, उज्जैन **३०. कारंजा(लाड) :** पं.श्री रमेशचंदजी शास्त्री, जयपुर **३१. अहमदनगर :** पं.श्री केशवरावजी जैन, नागपुर **३२. वाशिम(जवाहर कॉ.):** पं.श्री संदीपजी शास्त्री, गोहद, **३३. सोलापुर :** पं.श्री फूलचंदजी मुक्कीरवार, हिंगोली **३४. सोलापुर :** विदुषी मंजुषाजी मुक्कीरवार, हिंगोली **३५. पुसद :** पं.श्री नंदकिशोरजी मांगुलकर, शास्त्री **३६. सावदा :** पं.श्री विजयकुमारजी राऊत, रीठद **३७. फालेगाँव :** पं.श्री दिलीपजी महाजन, वाशिम **३८. निवघा :** पं.श्री अशोकजी वानरे, सेलू **३९. लासूर्णे :** पं.श्री विजयसेनजी पाटील, आलते **४०. गजपंथा :** पं.श्री राजुभाईजी जैन, कानपुर **४१. हिंगोली :** पं.श्री धर्मेन्द्रजी शास्त्री, बण्डा, **४२. औरंगाबाद :** पं.श्री अभिनवजी शास्त्री, मैनपुरी **४३. वर्धा :** पं.श्री विपिनकुमारजी शास्त्री, फिरोजाबाद **४४. पुणे(चिंचवड) :** पं.श्री जितेंद्रकुमारजी शास्त्री, पारशिवनी **४५. मुंबई(मलाड) :** विदुषी समताजी झांझरी, उज्जैन **४६. वसमतनगर :** पं.श्री राजूजी काले, रीठद **४७. बेलोरा :** पं.श्री अभिनंदन पाटील, **४८. अकलूज :** पं.श्री संतोषजी मिणचे **४९.माळशिरस :** पं.श्री जितेन्द्र चौगुले, **५०. नागपुर :** पं.श्री मधुकरजी गडेकर **५१.हिंगोली :** पं.श्री पद्माकरजी दोडल **५२. हिंगोली :** पं.श्री जयकुमारजी दोडल **५३. सांगली :** पं.श्री महावीरजी पाटील **५४. नवलूर :** पं.श्री बाहुबलीजी भोसगे **५५. वसमतनगर :** पं.श्री नेमीचंदजी महाजन **५६. लोणावला :** पं.श्री गोकुलचंदजी जैन **५७. पानकन्हेरगाँव :** पं.श्री अशोकजी मिरकुटे **५८. मुंबई :** पं.श्री अध्यात्मप्रकाशजी भारिल्ल **५९. मुंबई (एवरशाईननगर) :** पं.श्री विपिनकुमारजी शास्त्री **६०. मुंबई(अणुशक्तीनगर) :** पं.श्री संतोषकुमारजी जैन **६१. मुंबई(चेंबूर) :** पं.श्री सुमेरचंदजी बेलोकर **६२. मुंबई :** पं.श्री मणिभाईजी, मुनई **६३. मुंबई :** पं.श्री रूपेशजी शास्त्री, बैतुल **६४. देवलगाँवराजा :** पं.श्री उमाकांतजी बंड, शास्त्री **६५. देवलगाँवराजा :** पं.श्री विजयकुमारजी आव्हाने, शास्त्री **६६. चिखली :** पं.श्री देवलालजी जैन **६७. नागपुर :** पं.श्री मनोहरजी मारवडकर **६८. नातेपुते :** पं.श्री शितलचंदजी दोशी **६९. जयसिंहपुर :** पं.श्री पार्श्वनाथजी कुगे **७०. वर्धा :** पं.श्री राजेन्द्रजी भागवतकर **७१. एलोरा :** पं.श्री गुलाबचंदजी बोरालकर, शास्त्री **७२. एलोरा :** पं.श्री प्रदीपजी माद्रप, शास्त्री **७३. औरंगाबाद :** पं.श्री कल्याणमलजी गंगवाल **७४. बाहुबली :** पं.श्री नेमीनाथजी बालीकाई, शास्त्री **७५. कचनेर :** पं.श्री संजयजी राऊत, शास्त्री **७६. औरंगाबाद :** पं.श्री सचिन पाटनी शास्त्री, कन्नड **७७. सोलापुर :** पं.श्री नितिनजी कोठेकर, शास्त्री **७८. शिरडशहापुर :** पं.श्री प्रशांतजी काले, शास्त्री, **७९. डासाला :** पं.श्री अतुलजी शास्त्री, देवडिया, **८०. नागपुर :** पं.श्री प्रयंकजी शास्त्री, रहली, **८१.पंढरपुर:** पं.श्री प्रशांतजी शास्त्री, मौ **८२.वाशिम(चन्द्र. मं.) :** पं.श्री धर्मेशजी शास्त्री, रैयाना, **८३.सेलू :** पं.श्री विकासजी कंधारकर, **८४.शिरपुर :** पं.श्री संदीपजी शास्त्री, डडूका, **८५.मोताला :** पं.श्री विकासजी शास्त्री, बानपुर, **८६.मुळावा :** पं.श्री सत्येन्द्र मिरकुटे, **८७. मालेगाँव :** पं.श्री सुदीप कान्हेड, **८८.सेनगाँव :** पं.श्री रविन्द्र काले, कारंजा, **८९.चिखली :** पं.श्री दिग्विजय आलमान, **९०.बीड :** पं.श्री अश्विन नानावटी, **९१.मुंबई :** पं.श्री प्रकाश जैन,**९२.मुंबई(भायन्दर):** पं.श्री अनिल जैन।

(राजस्थान प्रान्त)

९३. उदयपुर(से.११) : पं.श्री तेजमलजी गंगवाल, इन्दौर **९४. उदयपुर(मु.म.) :** पं.श्री जगदीशजी पवार, उज्जैन **९५.उदयपुर(स. भ):** पं.श्री सौरभजी शास्त्री, शाहगढ़, **९६. उदयपुर(के.न.):** पं.श्री मनीषकुमारजी शास्त्री, देवलाली **९७. उदयपुर(से. ५):** पं.श्री कमल कुमारजी मलैय्या, जबेरा **९८. पिसांगन :** पं.श्री कमलेशकुमारजी शास्त्री, मौ **९९.बिजौलियाँ:** पं.श्री महेन्द्रजी जैन, सागर **१००. पिडावा :** पं.श्री जयकुमारजी जैन, बांरा **१०१. भीण्डर :** पं.श्री धर्मचंदजी जैन, जयथल **१०२. जौलाना :** पं.श्री लक्ष्मीचंदजी जैन, डूँगरपुर **१०३. बून्दी :** पं.श्री डूँगरमलजी जैन, सेमारी **१०४.कूँण** पं.श्रीकुन्दनमलजी जैन, पथरिया **१०५. डूँगरपुर(पत्र.कॉ):** पं.श्री ऋषभकुमारजी जैन, इन्दौर **१०६. भीलवाडा :** विदुषी ब्र. विमलाबहनजी, जबलपुर **१०७.अजमेर :** पं.श्री बिपिनकुमारजी शास्त्री, श्योपुरकलाँ

१०८.कुशलगढ (तेरापंथी मंदिर) : पं.श्री परेशकुमारजी शास्त्री, बांसवाडा **१०९. बीकानेर :** पं.श्री कैलाशचंदजी जैन, मोमासर **११०. थानागाजी :** पं.श्री राजीवकुमारजी शास्त्री, भिण्ड **१११. डूँगरपुर :** पं.श्री रीतेशजी शास्त्री, डडूका **११२. अलीगढ :** पं.श्री रमेशजी मोदी, सागर **११३. झालावाड:** पं.श्री सुनीलजी जैन, प्रतापगढ **११४.उदयपुर :** पं.श्री देवीलालजी मेहता कोटा **११५. बांसवाडा :** पं.श्री राजकुमारजी शास्त्री **११६. निम्बाहेडा :** पं.श्री सुनिलजी नाके **११७. कुचामनसिटी :** पं.श्री राकेशजी शास्त्री, लिधौरा **११८. बून्दी :** पं.श्री संजयजी सिंघई, सागर **११९.सुजानगढ :** पं.श्री अरविंदजी सिंघई **१२०. रूपाहेडीकलाँ :** पं.श्री पद्माकरजी मुंजोले, शास्त्री **१२१. अलवर :** पं.श्री अजितजी शास्त्री **१२२. अलवर :** पं.श्री प्रेमचंदजी शास्त्री **१२३. अलवर :** पं.श्री अरूणजी बंड, शास्त्री **१२४. अलवर :** पं.श्री नेमीचंदजी शास्त्री **१२५. प्रतापगढ :** पं.श्री सज्जनलालजी सावरिया **१२६. कोटा :** पं.श्री प्रेमचंदजी बजाज **१२७. किशनगढ :** पं.श्री पवनजी शास्त्री, शहपुरा **१२८. टामटीया :** पं.श्री प्रमोदकुमारजी जैन, शास्त्री **१२९. उदयपुर :** पं.श्री कन्हैयालालजी जैन **१३०. भीण्डर :** पं.श्री छोगामलजी जैन **१३१. भैसरोडगढ़ :** पं.श्री संजयजी जैन **१३२. जयपुर (जवाहरनगर) :** पं.श्री पीयूषजी शास्त्री, जयपुर **१३३. जयपुर :** पं.श्री दिनेशजी जैन, शास्त्री **१३४. जयपुर :** पं.श्री श्रुतेशजी सातपुते, शास्त्री **१३५. जयपुर :** पं.श्री अमोल संघई, शास्त्री **१३६. जयपुर :** पं.श्री भागचंदजी शास्त्री, बडागाँव **१३७. जयपुर :** पं.श्री नवीनजी पोद्दार, **१३८. कुचामन सिटी :** पं.श्री जयप्रकाशजी गांधी **१३९. जयपुर :** पं.श्री प्रवीण जैन शास्त्री **१४०. कानौड :** पं. चन्द्रप्रभातजी शास्त्री, बड़ामलहरा, **१४१.कुरावड :** पं. श्री सुनील शास्त्री शाहगढ़, **१४२.प्रतापगढ(माणक चौक) :** पं.श्री सौरभजी शास्त्री, शहपुरा **१४३.अकलेरा :** पं.श्री सुरेन्द्रजी शास्त्री, शाहगढ **१४४. उदयपुर (सेक्टर–३):** पं. सौरभजी शास्त्री शाहगढ **१४५. लकड़वास :** पं. अतुलजी शास्त्री, कोलारस, **१४६.उदयपुर (आ. नगर):** पं. राजेशजी शास्त्री, गुढा, **१४६.पीसागंन :** पं.श्री अमित जैन, लुकवासा, **१४७.साकरोदा :** पं.श्री अनंतवीर जैन, फिरोजाबाद, **१४८.चित्तौड़गढ :** पं. देवेन्द्र जैन, अकाझिरी, **१४९.लांबाखोह :** पं.श्री नितिन जैन, अहमदाबाद, **१५०. टोकर :** पं.श्री निखिल जैन, बण्डा, **१५१.प्रतापगढ :** पं.श्री रीतेश जैन, अहमदाबाद, **१५२.बेंगू:** पं.श्री सुदीप जैन, बरगी, **१५३.देवली:** पं.श्री सचिन्द्र जैन, गढाकोटा, **१५४.डबोक :** पं.श्री वरूण शाह, मुंबई , **१५५. केलवाडा :** पं.श्री विक्रान्त पाटनी, झालरापाटन, **१५६.वल्लभनगर :** पं.श्री वीरेन्द्र जैन, बरा, **१५७.तालेडा :** पं.श्री अनेकान्त जैन, **१५८.वैर(भरतपुर):** पं.श्री आशीष जैन, कोटा, **१५९.कुशलगढ :** पं.श्री प्रितेश जैन, **१६०.लूणदा :** पं.श्री स्वतंत्र जैन, **१६१.सिकरी :** पं.श्री आकाश जैन, **१६२.बोहेडा :** पं.श्री संभव जैन, **१६३.जयथल :** पं.श्री शशांक जैन, **१६४.लवाण :** पं.श्री अंचलप्रकाश जैन, **१६५.इटावा :** पं.श्री नवीनजी शास्त्री बरा, **१६६.नौगाँवा :** पं. श्री शीतलजी शास्त्री, **१६७. उदयपुर :** पं. श्री हीराचन्दजी अखावत, **१६८.श्रीमहावीरजी:** श्री संजयजी जैन, खनियाँधाना।

(मध्यप्रदेश प्रान्त)

१६९. सागर(मकरोनीया): पं.श्री बाबुभाईजी मेहता, फतेपुर **१७०. भोपाल(महावीरनगर):** पं.श्री कैलाशचंदजी 'अचल' शास्त्री, ललितपुर, **१७१.रीवा:** पं.श्री सौरभजी शास्त्री, फिरोजाबाद, **१७२. गुना (मु. मण्डल) :** पं.श्री श्रेंयासकुमारजी शास्त्री, जयपुर, **१७३. गुना(शां. मंदिर):** पं.श्री सुरेशचंदजी सिंघई, भोपाल, **१७४.ग्वालियर (सीमन्धर जिनालय) :** पं.श्री अजितकुमारजी जैन, **१७५.इन्दौर(रामचंद्रनगर):** पं.श्री चन्दुभाईजी मेहता, फतेपुर, **१७६.इन्दौर(साधनानगर):** पं.श्री देवेन्द्रकुमारजी जैन, बिजौलीया, **१७७.ग्वालियर (मुरार) :** पं.श्री सुनीलजी शास्त्री, **१७८. इन्दौर(देवास रोड):** पं.बाबूलालजी पल्लीवाल, गुना **१७९. इन्दौर(रामा.मंदिर) :** पं.श्री वीरचंदजी जैन, हजारीबाग **१८०. इन्दौर (गांधीनगर) :** पं.श्री ऋषभकुमारजी शास्त्री, अहमदाबाद **१८१. इन्दौर (नन्दानगर) :** पं.श्री दीपकजी जैन, झूमरीतलैया **१८२.इन्दौर(माणक चौक) :** पं.श्री अमितजी शास्त्री, जबेरा **१८३. द्रोणगिरी :** पं.श्री दिनेशभाईजी शहा, मुंबई **१८४. द्रोणगिरी :** विदुषी डॉ.उज्ज्वलाजी शहा, मुंबई **१८५.आरोन :** विदुषी कल्पनाजी जैन, सागर **१८६.भिण्ड(परमागम) :** पं.श्री गुलाबचंदजी जैन, बीना **१८७.भिण्ड (देवनगर):** पं.श्री हुकमचंदजी सिंघई, राधौगढ **१८८. खुरई :** पं.श्री कोमलचंदजी जैन, टडा **१८९.अशोकनगर :** पं.श्री प्रद्युम्नकुमारजी जैन, मुजफ्फरनगर **१९०.छिंदवाडा :** पं.श्री संजयकुमारजी जैन, नागपुर **१९१.भोपाल (चौक) :** पं.श्री संजीवकुमारजी गोधा, जयपुर **१९२.भोपाल (पिपलानी) :** पं.श्री महेन्द्रजी जैन भिण्ड **१९३.ग्वालियर(सोडे कुआँ) :** पं.श्रीअजीतकुमारजी जैन, ग्वालियर **१९४. ग्वालियर(लश्कर) :** पं.श्री महेशचंदजी जैन, ग्वालियर **१९५.रतलाम :** पं.श्री पद्मकुमारजी अजमेरा, उज्जैन **१९६. लुकवासा :** पं.श्री केवलचंदजी जैन, गुना **१९७.मौ :** पं.श्री गुलाबचंदजी जैन, भोपाल **१९८. कोलारस :** पं.श्री नंदकिशोरजी गोयल, विदिशा **१९९.उज्जैन :** पं.श्री विक्रान्तकुमारजी शहा, सोलापुर २००. **मण्डला :** पं.श्री शिखरचंदजी जैन, सिवनी **२०१.बेगमगंज :** पं.श्री विमलकुमारजी जैन, जलेसर २०२. **बडवानी :** विदुषी पुष्पाबहनजी, खण्डवा **२०३.केसली :** पं.श्री रूपचंदजी जैन, बण्डा **२०४.निसई(तारण तरण):** पं.श्री देवेन्द्रकुमारजी जैन, सिंगोडी **२०५.शुजालपुर सिटी :** पं.श्री सिद्धार्थजी दोशी, रतलाम **२०६.शाहपुर :** पं.श्री बाबूलालजी बांझल, गुना **२०७. फुटेरा :** पं.श्री सुगनचंदजी जैन, गुना **२०८. खनियांधाना :** पं.श्री अशोकजी जैन, सिरसागंज **२०९.शाहगढ :** पं.श्री अजीतकुमारजी जैन, फिरोजाबाद **२१०. विदिशा(माधवगंज):** पं.श्री कमलकुमारजी जैन, पिडावा **२११.रांझी:** पं.श्री निलयजी शास्त्री, टीकमगढ़ **२१२.लोहारदा :** पं.श्री शांतीलालजी सोगानी, महीदपुर **२१३.बडनगर :** पं.श्री अनिलकुमारजी पाटोदी, बडनगर **२१४.जावरा:** पं.श्री चन्दुभाईजी जैन, कुशलगढ **२१५.अकाझिरी :** पं.श्री सरदारमलजी जैन, बेरसिया **२१६.अमायन :** पं.डॉ. दीपकजी जैन शास्त्री, जयपुर **२१७.सागर(गौरमूर्ती):** पं.श्री अनिलकुमारजी शास्त्री, भिण्ड **२१८.करेली :** पं.श्री सतीशचंदजी जैन, पिपरई, **२१९.सिवनी :** पं.श्री राजेन्द्रकुमारजी जैन, पिपरई **२२०.धरमपुरी :** पं.श्री संजयजी सेठी, जयपुर **२२१.भोपाल(कोहेफीजा) :** पं.श्री योगेशजी शास्त्री, बरा २२२. **इन्दौर (शक्करबाजार) :** पं.श्री रीतेशकुमारजी जैन, सनावद **२२३. विदिशा :** पं.श्री नितिन जैन, बडकुल **२२४. शहडोल :** पं.श्री सुदीपजी शास्त्री, बासवांडा **२२५. विजयपुर :** पं.श्री संतोषजी साहुजी, अंबड **२२६. दुर्ग :** पं.श्री अनिश जैन, छिंदवाडा **२२७. निसई :** पं.श्री कपूरचंदजी समैय्या **२२८. भीतरवार :** पं.ब्र. रमेशजी जैन, भोपाल **२२९. बडामलहरा :** पं.श्री मुरारीलालजी, नरवर **२३०. उज्जैन :** पं.श्री बेलजीभाई शाह **२३१. कटनी :** पं.श्री संतोषजी शास्त्री, दमोह **२३२. टीकमगढ :** विदुषी मीनाबहनजी **२३३. टीकमगढ :** विदुषी ममताबहनजी **२३४. छिंदवाडा :** पं.श्री ऋषभजी शास्त्री, छिंदवाडा **२३५. ग्यारसपुर :** पं.श्री राजेशजी शास्त्री, विदिशा **२३६. गंजबासौदा :** पं.श्री संजीवजी शास्त्री, इन्दौर **२३७. अशोकनगर :** पं.श्री

अमोलकचंदजी जैन २३८. **लोहारदा :** पं.श्री छगनलालजी जैन २३९. **सिवनी :** पं.श्री के. सी. भारिल्लजी २४०. **बीना :** पं. श्री राजेशजी जैन २४१. **भोपाल :** पं.श्री राजमलजी पवैय्या २४२. **इटारसी :** पं.श्री राजेन्द्रकुमारजी जैन, अमरपाटन २४३. **निसइ :** पं.श्री कपूरचंदजी समैय्या २४४. **भोपाल :** पं.श्री महेशचंदजी जैन, गुढा २४५. **घोडाडोंगरी :** पं.श्री सुरेशचंदजी जैन २४६. **दलपतपुर :** पं.श्री निखिलेशजी शास्त्री २४७. **भिण्ड :** पं.श्री उदयमणिजी शास्त्री २४८. **बेरी :** पं.श्री माणिकचंदजी जैन २४९. **भोपाल :** पं.श्री अनुरागजी शास्त्री २५०. **पथरिया :** पं.श्री नेमीचंदजी जैन २५१. **महीदपुर :** पं.श्री सतीशजी कासलीवाल २५२. **दलपतपुर :** पं.श्री अरूणजी मोदी शास्त्री २५३. **जावरा :** पं.श्री हीरालालजी गंगवाल २५४. **बीना :** पं.श्री लखमीचंदजी जैन २५५. **बीना :** पं.श्री मोतीलालजी जैन २५६. **इंदौर :** पं.श्री कान्तीकुमारजी पाटनी २५७. **इंदौर :** पं.श्री विमलप्रकाशजी अजमेरा २५८. **अशोकनगर :** पं.श्री अरूणकुमारजी लालोनी २५९. **ग्वालियर(गंज) :** पं.श्री धनेन्द्रजी सिंघल २६०. **खनियाधांना :** पं.श्री ताराचंदजी पटवारी २६१. **खनियांधाना :** पं.श्री संजयजी जैन, शास्त्री २६२. **ग्वालियर(मुरार) :** पं.श्री सुनिलजी जैन २६३. **गुना :** पं.श्री मांगीलालजी जैन २६४. **बीना बजरीया :** पं.श्री सत्येंद्रजी जैन २६५. **बदरवास :** पं.श्री अभयकुमारजी जैन २६६. **विदिशा :** पं.श्री जवाहरलालजी बडकुल २६७. **अशोकनगर :** पं.श्री विमलजी जैन २६८.**कालापीपल :** पं.श्री महेन्द्रजी सेठी २६९.**अंबाह :** पं.श्री नयनेशजी शास्त्री, ओबरी २७०. **मल्हारगढ :** पं.श्री निकलंकजी शास्त्री, कोटा २७१. **मगरौन :** पं.श्री संदीपजी शास्त्री, विनौता २७२. **तांखला :** पं.श्री रविजी शास्त्री, पिडावा २७३. **अंबाह :** पं. प्रक्षालजी शास्त्री, उदयपुर २७४. **अमरकोट :** अजितजी शास्त्री, मौ २७५. **गढाकोटा :** पं.श्री अनुपम जैन, अमायन २७६. **सुजालपुर मण्डी :** पं.श्री अभिषेक जैन, सिलवानी २७७. **बण्डा :** पं.श्री आशीष जैन, जबेरा २७८. **मंदसौर :** पं.श्री अजित जैन, गडखेडा २७९. **सिंगोडी :** पं.श्री दीपेश जैन, गुढा २८०. **गौरझामर :** पं.श्री जितेन्द्र जैन, सिंगोली २८१. **करैरा :** पं.श्री जितेन्द्र जैन, खडैरी २८२. **मक्सी :** पं.श्री जितेंद्र यादव, बानपुर २८३. **कुचडौद :** पं.श्री राहुल जैन, बदरवास २८४. **बेडीया :** पं.श्री चैतन्य जैन, खडैरी २८५. **चंदेरा :** पं.श्री नयनेश जैन, ओबरी २८६. **हरसूद :** पं.श्री भरत जैन २८७. **सनावद :** पं.श्री आशीष शास्त्री विनौता २८८. **रहली :** पं.श्री अनुराज जैन २८९. **कर्रापुर :** पं.श्री आदित्य जैन २९०. **कालापीपल** : पं.श्री नितेंद्र जैन।

(उत्तरप्रदेश प्रान्त)

२९१.**रूडकी :** पं.श्री लालारामजी साहू, अशोकनगर २९२.**धामपुर :** पं.श्री मनोजजी जैन, मुजफ्फरनगर २९३.**एत्मादपुर :** पं.श्री भागचंदजी जैन, पथरिया २९४.**बागपत :** पं.श्री गोकुलचंदजी सरोज, ललितपुर २९५.**सुल्तानपुर :** पं.श्री सलेखचंदजी जैन, शामली २९६.**मुजफ्फरनगर :** पं.श्री विनोदकुमारजी जैन, गुना २९७.**कुरावली :** पं.श्री नागेशजी जैन, पिडावा २९८.**आगरा(ताजगंज):** पं.श्री अरूणकुमारजी मडवैय्या २९९.**डांडा इटावा :** पं.श्री अजीतकुमारजी जैन, मडावरा ३००.**ललितपुर :** पं.श्री अनुभवप्रकाशजी शास्त्री, कानपुर ३०१.**मैनपुरी:** विदुषी ब्र. सुधाबहनजी, छिंदवाडा ३०२.**मेरठ(तीरगरान):** पं.श्री निर्मलजी जैन, सागर ३०३.**रानीपुर :** पं.श्री ललितकुमारजी शास्त्री, बण्डा ३०४.**आगरा (नमकमण्डी):** पं.श्री ऋषभकुमारजी शास्त्री, ललित पुर ३०५**कानपुर (सर्राफा चौक):** पं.श्री अनिलकुमारजी धवल शास्त्री, भोपाल ३०६. **कानपुर (कारवालोनगर):** पं.श्री अरविंदजी शास्त्री, टीकमगढ ३०७. **कानपुर(कराची खाना):** पं.श्री जिनेंद्रकुमारजी शास्त्री, उदयपुर ३०८. **गन्नौर(सोनीपत):** पं.श्री महेशचंदजी जैन, भोपाल ३०९. **फिरोजाबाद :** पं.श्री विजय यादव, बानपुर, ३१० **खतौली :** पं.श्री कल्पेन्द्रजी जैन ३११ **ललितपुर :** पं.श्री भानुकुमारजी शास्त्री ३१२. **सुल्तानपुर :** पं.श्री देवचंदजी जैन ३१३. **खतौली :** पं.श्री सोनूजी पाण्डे शास्त्री ३१४. **खतौली :** पं.श्री ज्ञायकजी शास्त्री, राजकोट, ३१५. **सकीट :** पं.श्री कस्तुरचंदजी शास्त्री, खडैरी ,३१६. **खतौली:** पं.श्री पराग महाजन, कारंजा, ३१७. **बाह :** पं.श्री दीपकजी डांगे, ३१८. **बडौत :** पं.श्री सुनीलजी बेलोकर, सुल्तानपुर, ३१९. **कासगंज :** पं.श्री विशालजी सर्राफ, नासिक, ३२०. **गंगेरू :** पं.श्री अभिषेकजी शास्त्री, रहली, ३२१. **अमरोहा :** पं.श्री नीरजजी खडेरी, ३२२. **शिकोहाबाद :** पं. चेतन जैन खड़ैरी, ३२३. **गंगेरू :** पं. सुरेश काले, राजुरा, ३२४. **बानपुर :** पं. जिनेश जैन, खैरागढ, ३२५. **कायमगंज** : पं. श्री रवीशजी गाँधी, घाटोल, ३२६. **बागपत** : पं. श्री शीतलजी आलमान, ३२७. **करहल** : पं. श्री वीरेन्द्रकुमारजी जैन, ३२८. **करहल** : रमेशचन्दजी जैन, ३२९. **डांडा इटावा** : पं. श्री हुकमचन्दजी जैन, ३३०. **बडौत** : पं. श्री शिखरचन्दजी जैन, ३३१.**घिरोर** : पं. श्री शोभालालजी जैन, ३३२. **सिरसागंज** : पं. पवनजी शास्त्री, मौ., ३३३. **करहल** : पं. श्री अरविन्दजी जैन।

(गुजरात प्रान्त)

३३४. **अहमदाबाद(नवरंगपुरा):** पं.श्री सुरेन्द्रकुमारजी जैन, उज्जैन ३३५. **अहमदाबाद (बहे. पुरा):** पं.श्री सुरेशजी जैन,टीकमगढ़ ३३६. **अहमदाबाद(पालडी):** पं.श्री मेहुलकुमारजी मेहता शास्त्री, कोलकाता ३३७. **अहमदाबाद(मणिनगर):** पं.श्री मनोजकुमारजी शास्त्री, डडूका ३३८. **अहमदाबाद(न्यू जैन):** पं.श्री प्रवेशकुमारजी भारिल्ल, करेली ३३९. **अहमदाबाद(ओढोव):** पं.श्री रमणभाईजी दोशी, तलोद ३४०. **अहमदाबाद(बापूनगर):** पं.श्री शिखरचंदजी जैन, विदिशा ३४१. **अहमदाबाद(आ. नगर):** विदुषी राजकुमारीजी जैन, जयपुर ३४२. **हिम्मतनगर :** विदुषी ज्ञानधाराजी झांझरी, उज्जैन ३४३. **हिम्मतनगर :** विदुषी पुष्पाजी झांझरी, उज्जैन ३४४. **दाहोद :** पं.श्री दिलीपकुमारजी बाकलीवाल, इन्दौर ३४५. **पोरबंदर :** पं.ब्र. सुकुमालजी झांझरी, उज्जैन ३४६. **तलोद :** पं.श्री श्रेणिकजी जैन, जबलपुर ३४७. **मोरबी :** पं.श्री चेतनजी शास्त्री, कोटा ३४८. **रखियाल :** पं.श्री शुद्धात्मप्रकाशजी शास्त्री, मौ ३४९. **बडोदरा :** पं.श्री श्रेंयासकुमारजी शास्त्री, जबलपुर ३५०. **वापी :** पं.श्री आशीषकुमारजी शास्त्री, टीकमगढ, ३५१. **जेतपुर :** पं. राहुल जैन बिनौता, ३५२. **सरसपुर :** पं. शाकुल जैन, ३५३. **अहमदाबाद** : पं. श्री दीपचन्दजी जैन, ३५४. **मोरवी** : पं. श्री इन्दुभाई सिंघवी, ३५५. **हिम्मतनगर** : पं. श्री मिठाभाईजी दोशी।

(अन्य प्रान्त)

३५६. **कोलकाता :** पं.श्री वीरेन्द्रकुमारजी जैन, आगरा ३५७. **कोलकाता :** पं.ब्र. हेमचंदजी हेम, देवलाली ३५८. **हिसार :** पं.श्री वीरेन्द्रकुमारजी वीर, फिरोजाबाद ३५९. **सिंकदराबाद :** पं.श्री हेमन्तजी बेलोकर, ढासाला ३६०. **चेन्नई :** पं.श्री सुगनमलजी लोढा, जयपुर ३६१. **सरिया :** पं.श्री रतनचंदजी शास्त्री, कोटा ३६२. **पेटरवार :** पं.श्री प्रशांतजी मोहरे शास्त्री, सोलापुर ३६३. **बेलगाँव :** पं.श्री कस्तूरचंदजी जैन, विदिशा ३६४. **एर्नाकुलम :** पं.श्री गजेन्द्रजी शास्त्री, बडामलहरा ३६५. **चेन्नई :** पं.श्री सुभाषजी शास्त्री ३६६. **बेंगलोर :** पं.श्री किशोरजी शास्त्री ३६७. **कनकगिरी :** पं.श्री नाभिराजनजी शास्त्री ३६८.

(शेष पृष्ठ 8 पर ....)

तत्त्वचर्चा

समयसार का सार 73

गतांक से आगे

– डॉ॰ हुकमचन्द भारिल्ल

कर्ता–कर्म अधिकार के प्रारंभ में भी कहा था कि जबतक यह आत्मा, आत्मा और आस्रव को भिन्न–भिन्न नहीं जानेगा, तब तक अज्ञानी रहेगा और यहाँ कह रहे हैं कि जबतक यह आत्मा, आत्मा और बंध के बीच भेदविज्ञान करके इन दोनों को पृथक्–पृथक् नहीं करेगा; तबतक साध्य की सिद्धि नहीं होगी।

पृथक्–पृथक् करना और पृथक्–पृथक् जानना एक ही बात है; क्योंकि दो द्रव्य परस्पर पृथक्–पृथक् तो हैं ही उनके बीच में वज्र की दीवाल है, अतः करना तो कुछ है ही नहीं, मात्र जानना ही है। यहाँ जानना ही करना है।

अतएव द्विधाकरण ही एकमात्र उपाय है।

इसके बाद 293 वीं गाथा में आचार्य कहते हैं –

बंधाणं च सहावं वियाणिदुं आपणो सहावं च।
बंधेसु जो विरज्जदि सो कम्मविमोक्खणं कुणदि।।293।।

इस गाथा में कहा गया है जो बंध को और आत्मा के स्वभाव को बिल्कुल अलग–अलग जानकर, जो बंध से विरक्त होते हैं और आत्मा में अनुरक्त होते हैं; वे कर्मों से मुक्त होते हैं।

जीवाजीवाधिकार में कहा था कि जीव और अजीव को भिन्न जानना धर्म है। पुण्य–पाप अधिकार में कहा – पुण्य और पाप से भिन्न आत्मा को जानना धर्म है। फिर आस्रवाधिकार में कहा – आस्रव और आत्मा को भिन्न जानना धर्म है और बंध अधिकार में कहा कि बंध और आत्मा को भिन्न जानना धर्म है। सभी जगह भिन्न जानने की ही मुख्यता है।

मोक्ष अधिकार में यह कहा कि धर्म की परिभाषा के लिए प्रत्येक में इतना और जोड़ दो कि जीव और अजीव से भिन्न आत्मा को जानकर अन्य जीव और अजीव से विरक्त होना और अपने आत्मा में अनुरक्त होना ही धर्म है। पुण्य और पाप से भिन्न आत्मा को जानकर पुण्य–पाप से उपयोग को हटाना और आत्मा में लगाना धर्म है। आस्रव और आत्मा को भिन्न–भिन्न जानकर आस्रव से उपयोग हटाना और आत्मा में लगाना ही धर्म है।

सारांश के रूप में कहें तो जीवादि सात तत्त्वों, जीवादि छह द्रव्यों – इन सबसे भिन्न भगवान आत्मा को जानकर यह ही मैं हूँ – ऐसा मानना और उसका चिंतन करना, उसका ही विचार करना, उसमें ही उपयोग को लगाना, वही धर्म है और उससे ही मुक्ति की प्राप्ति होती है।

यह बात सुनकर शिष्य कहता है कि आपने जो कहा, वह हमारी समझ में अच्छी तरह से आ गया है; लेकिन इसका साधन क्या है ? उपाय क्या है ? क्योंकि जो–जो हम साधन मानते हैं, उनका आप निषेध करते हो।

हम कहते हैं कि देह से भिन्न भगवान आत्मा है; अतः भगवान आत्मा को देह से भिन्न करना है; इसलिए उपवासादि करके देह को सुखा दे तो इससे आत्मा देह से भिन्न हो जायेगा और हमारा मोक्ष हो जायेगा, तो आप कहते हैं कि ये रास्ता नहीं है। हम कहते हैं कि जिन कर्मों से हम बंधे हैं, काटने के लिए उनका विचार करें, तो तुम कहते हो, यह रास्ता सही नहीं है। व्रत, उपवास, तीर्थयात्रा, दान ये उपाय नहीं है ? तो फिर उपाय क्या है ?

उपाय के रूप में आचार्य कहते हैं कि भिन्न साधन–साध्य की बात ठीक नहीं है। अभिन्न साधन–साध्य होना चाहिए अर्थात् साधन भी हमारे अन्दर होना चाहिए, स्वाधीन होना चाहिए।

यदि चीन से लड़ाई लड़नी हो और जीतना हो तो उसका उपाय अमेरिका से हाथ–पैर जोड़ना नहीं, रूस को बुलाना नहीं है, क्योंकि यह उपाय तो और अधिक पराधीन होने का हुआ। जिससे सहायता माँगी, उसके आधीन तो पहले ही हो गये। अतएव आजाद होने का, स्वतंत्रता कायम रखने का यह उपाय नहीं है।

उसीप्रकार दुःखों से मुक्त होने का साधन अभिन्न होना चाहिए। वह आत्मा की ही निजी सम्पत्ति होनी चाहिए।

मोक्ष अधिकार की 294 वी गाथा में इस साधन को स्पष्ट करते हुए कहते हैं –

जीवो बंधो य तहा छिज्जंति सलक्खणेहिं णियएहिं।
पण्णाछेदणएण दु छिण्णा णाणत्तमाावण्णा।।294।।

जीव और बंध दोनों को लक्षणों से पहचानकर फिर प्रज्ञारूपी छैनी को दोनों के बीच में डालकर उन्हें अलग–अलग कर देना चाहिए।

वर्णाद्या वा रागमोहादयो वा।
भिन्ना भावाः सर्व एवास्य पुंसः।।

इसी के संबंध में आचार्य अमृतचन्द्र कहते हैं –

प्रज्ञाछैनी शितेयं कथमपि निपुणैः पातिता सावधानैः
सूक्ष्मेऽन्तः संधिबन्धे निपतति रभसादान्यकर्मोभयस्य।
आत्मानं मग्नमंतः स्थिरविशदलसद्धाम्नि चैतन्यपूरै
बंधं चाज्ञानभावे नियमितमभितः कुर्वती भिन्नभिन्नौ।।181।।

यह प्रज्ञारूपी तीक्ष्ण छैनी प्रवीण पुरुषों के द्वारा किसी भी प्रकार से सावधानतया पटकने पर आत्मा और बंध को सर्वतः भिन्न–भिन्न करती हुई पड़ती है।

जिसप्रकार पत्थर छैनी से काटे जाते हैं तो कारीगर थोड़ी सी ठोकर मारता है और छह फुट लम्बी पट्टी अलग हो जाती है। कारीगर को पता रहता है कि अन्दर यहाँ दराज है, यहाँ पर मारूँगा तो टूटेगी, अन्यथा नहीं। इसीप्रकार आत्मा और कर्म के बीच में सूक्ष्म अन्तःसन्धि है, यदि वहाँ प्रज्ञारूपी छैनी डाले तो दोनों अलग हो जायेंगे। (क्रमशः)

रजिस्ट्रेशन आर. एन. आई. 31109/77

(पृष्ठ 1 का शेष ....)

अधिवेशन का उद्घाटन श्री बाबूलाल नगीनदासजी शहा अहमदाबाद ने किया।

सभा में श्री प्रदीपकुमारजी झांझरी ने गत मीटिंग की कार्यवाही सुनाई, चालू वर्ष 2003-2004 का बजट श्री हरकचन्दजी बिलाला ने प्रस्तुत किया तथा श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धान्त महाविद्यालय की रिपोर्ट पण्डित शान्तिकुमारजी पाटील ने प्रस्तुत की।

इस अवसर पर भगवान महावीर की जन्मस्थली वैशाली ही है - इस आशय के एक प्रस्ताव सभा में आया तथा डॉ. राजेशकुमार बंसल ने प्रस्तुत किया, जिसे सर्व सम्मति से पारित किया गया। एटर्नी जनरल श्री सोली सोराबजी ने अंग्रेजी अखबार में दिगम्बरत्व के विरुद्ध जो अनावश्यक टिप्पणी की थी, उसकी निन्दा की गई। तीर्थक्षेत्रों के साथ-साथ मुमुक्षु समाज की तथा संस्थाओं की प्रतिनिधि शीर्षस्थ संस्था श्री कुन्दकुन्द कहान दिगम्बर जैन तीर्थसुरक्षा ट्रस्ट से आग्रह पूर्वक अपेक्षा व्यक्त की गई कि अन्यायिक सामाजिक अडचनों से निपटने के लिये मार्गदर्शन एवं सहयोग प्रदान किया जावे।

सदस्यों एवं अतिथियों में श्री विनयकुमारजी पापड़ीवाल जयपुर ने परमागम शास्त्रों के टीकाकार आचार्य प्रभाचन्द्रजी की संस्कृत टीका का भाषान्तर प्रकाशित करने के लिये तथा तीर्थसुरक्षा ट्रस्ट द्वारा पूर्व में प्रकाशित सम्यग्ज्ञान चन्द्रिका एवं मोक्षमार्ग प्रकाशक अंग्रेजी का पुन: संस्करण निकालने का विचार रखा। इनके अतिरिक्त डॉ. राजेन्द्रकुमार बंसल अमलाई, श्री हीराचन्दजी बोहरा अजमेर, श्री धनसिंहजी जैन पिड़ावा, श्री कनकमलजी जैन रावटी, ब्र. कुन्दनलालजी पथरिया एवं श्री अशोककुमारजी जबलपुर ने भी अपने सुझाव ट्रस्ट के सामने रखे।

इस अवसर पर डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल ने सभा को मार्मिक उद्बोधन दिया। श्री वसन्तभाई एम. दोशी ने अपने वक्तव्य में संस्था द्वारा तीर्थक्षेत्रों व स्वाध्याय भवन हेतु 10 लाख 31 हजार रुपये के अनुदान का विवरण दिया तथा आर्थिक स्तर पर कमजोर साधर्मियों के लिये वैद्यकीय एवं शैक्षणिक सहायता की योजना की चर्चा की।

अध्यक्षीय भाषण में श्री धन्यकुमारजी बेलोकर ने संस्था को दिये गये आर्थिक सहयोग के लिये समाज के प्रति आभार व्यक्त किया एवं सभी प्रकार से सेवायें देते रहने की घोषणा की।

अन्त में ब्र. जतीशचन्दजी शास्त्री, सनावद द्वारा आभार प्रदर्शन किया गया। सभा का संचालन पण्डित प्रदीपकुमारजी झांझरी, उज्जैन ने किया।

इस प्रसंग पर तीनलोक मंडल विधान का आयोजन श्री बाबूलाल सुखलाल पंचोली परिवार थांदला तथा स्व. श्री राजमलजी पाटनी की स्मृति में उनकी धर्मपत्नी श्रीमती रतनदेवी एवं सुपुत्र श्री अशोककुमारजी पाटनी परिवार कोलकाता द्वारा किया गया।

शिविर में योगसार (मराठी), जिनेन्द्र-अष्टक (मराठी), इष्टोपदेश, समाधितन्त्र, सम्यग्दर्शन, एवं डॉ. भारिल्ल और उनका कथा साहित्य का भी लोकार्पण किया गया।

दिनांक 4 अगस्त को संक्षिप्त समापन के तौर पर महाविद्यालय के अधीक्षक पण्डित शांतिकुमारजी पाटील ने शिविर की समस्त गतिविधियों का विवरण प्रस्तुत किया।

(पृष्ठ 6 का शेष ....)

चम्पापुर : पं.श्री मनिष जैन शास्त्री, खडैरी **३६९. भागलपुर :** पं.श्री जागेशजी शास्त्री, जबेरा **३७०. चेन्नई :** पं.श्री ए. बालाजी, शास्त्री।

पूर्वी दिल्ली : **३७१. शिवाजी पार्क :** पं. महेन्द्रचन्दजी जैन कानपुर, **३७२. पाण्डवनगर :** सत्येन्द्रमोहन जैन, पडपडगंज, **३७३. दिलसाज गार्डन :** पं. विकास जैन, नवीन शाहदरा, **३७४. न्यूलाहौर (शास्त्रीनगर):** पं. अशोक शास्त्री दिलशाज गार्डन, **३७५. पड़पड़गंज गांव :** पं. प्रकाशचन्दजी जैन मैनपुरी, **३७६. पार्श्व विहार :** पं. ऋषभजी जैन शास्त्री उस्मानपुर, **३७७. शंकरनगर :** डॉ. अशोक जैन चन्द्रविहार, **३७८. अशोकनगर:** पं. अमित जैन शाहदरा।

पश्चिमी दिल्ली : **३७९. लारेंस रोड :** पं. आशीष शास्त्री भिण्ड **३८०. पुष्पांजलि एन्क.:** पं. संदीप शास्त्री बांसवाड़ा, **३८१. पालम गांव :** पं. अविरल शास्त्री विदिशा, **३८२. आत्मार्थी ट्रस्ट :** पं. धनसिंहजी जैन पिड़ावा एवं पं. मनीष शास्त्री नकुड़, **३८२. जनकपुरी सी-२ :** पं. मिश्रीलालजी खनियॉधाना, **३८३. नांगलोई :** पं. कस्तूरचन्दजी बजाज भोपाल, **३८४. वल्लभविहार (रोहिणी):** प्रमोद शास्त्री शाहगढ, **३८५. सुंदरविहार :** पं. श्रेयांस शास्त्री अभाना, **३८६. मिलापनगर :** पं. नितिन जैन नांगलराय।

मध्य दिल्ली : 387. अशोकविहार फेज-1 : पं. सुनील धवल भोपाल, 388. (पहाड़गंज): पं. सुरेशचन्द जैन कोलारस, 389. शंकररोड (राजेन्द्रनगर) : डॉ. वीरसागर जैन, 390. भारत नगर : पं. पंकज शास्त्री खड़ैरी, 391. राजा बाजार : डॉ. राजेन्द्र बंसल अमलाई, 392. वेदवाड़ा : पं. संदीप जैन शास्त्री छतरपुर, 393. वालाश्रम (दरियागंज): पं. मनीष शास्त्री 'कहान' खड़ैरी, 394. शक्तिनगर : पं. संजीव जैन उस्मानपुर, 395. धरमपुरा : पं. मनोज जैन शास्त्री पार्क, 396. सीताराम बाजार : पं. सुशील जैन शास्त्री भोपाल, 397. सब्जीमण्डी (आर्यपुरा): पं. राकेश जैन शास्त्री दिल्ली

दक्षिणी दिल्ली/बाहरी क्षेत्र : 398. गोविन्दपुरी : पं. आशीष शास्त्री विदिशा, 399. भोगल : डॉ. अशोक जैन दिल्ली, 400. बहादुरगढ (हरियाणा): विदुषी कुसुमलता जैन खनियॉधाना, 401. झज्जर (हरियाणा): पं. अभिनव शास्त्री जबलपुर, 402. फरीदाबाद (हरिसाणा) : पं. मांगीलालजी कोलारस, 403. बलरामनगर (उ.प्र.): पं. अमित जैन दिल्ली, 404. सरधना (उ.प्र.): पं. मोतीलालजी करेली, 405. खेकड़ा (उ.प्र.): डॉ. मुकेश शास्त्री 'तन्मय' विदिशा, 406. रोहतक (हरियाणा): डॉ. महावीप्रसाद जैन टोकर।

जैनपथप्रदर्शक (पाक्षिक) अगस्त (द्वितीय) २००३
J.P.C. 3779/**02/2003-05**

प्रति,

सम्पादक : **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल** शास्त्री, न्यायतीर्थ, साहित्यरत्न, एम.ए., बी.एड.
प्रबन्ध सम्पादक : **पण्डित संजीवकुमार गोधा जयपुर,** डबल एम.ए. (जैनविद्या एवं तुलनात्मक धर्मदर्शन) तथा इतिहास
प्रकाशक एवं मुद्रक : **ब्र. यशपाल जैन** द्वारा जैनपथप्रदर्शक समिति के लिए जयपुर प्रिण्टर्स प्रा.लि., एम. आई. रोड, जयपुर से मुद्रित तथा त्रिमूर्ति कम्प्यूटर्स, ए-4, बापूनगर, जयपुर से प्रकाशित।

यदि न पहुँचे तो कृपया निम्न पते पर भेजें -
ए- 4 बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)
फोन : (0141) 2705581, 2707458
तार : त्रिमूर्ति, जयपुर **फैक्स :** 2704127